IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समकालीन कथा साहित्य में महिला साहित्यकार मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन

शोधार्थी आषा वर्मा
जीवाजी विष्वविद्यालय ग्वालियर
मार्गदर्षिका

प्राचार्य डॉ. ज्योती उपाध्याय
वी.आर.जी. गर्ल्स कॉलेज,
मुरार ग्वालियर

स्वतन्त्रता के पश्चात अनेक महिला लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से युग जीवन को जीवंत, सार्थक एवं अद्युनातन दृष्टिकोण से अभिव्यक्त किया है। स्वतत्रता के पश्चात महिला कथालेखन ने बदलते हुए सामाजिक सन्दर्भों को यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान की है। *''अपने परिवेश में रहते हुए कथाकार जिन संवेदनात्मक क्षणों को अर्जित करता हैं वे ही उसकी रचना दृष्टि को विकसित करते हैं।''*[1]

इस प्रकार लेखिका के कथा साहित्य में नारी चित्रण दिखाई देता है। सघर्षरत नारी कभी–कभी विद्रोह तक पहुँचती दिखाई देती है। यहाँ नारी में विद्रोह, अलगाव है, परंतु मानसिक धरातल पर कई स्थानों में न प्रेम हो सका, न अनुभूति पर संवाद। लेखिका की नायिकाएँ कभी सामाजिक ढाँचे पर कुढ़ती है, और कभी सम्यक परिवर्तन के लिए उद्विग्न दिखाई देती है।

समकालीन जीवन की विसंगतियों, बदलते सन्दर्भों एवं विडम्बनाओं को स्पष्ट करने में समकालीन महिला लेखिकाओं ने अहम् भूमिका अदा की है। सर्वपथम उसी परिदृष्य पर यहाँ प्रकाश डालने का उपक्रम है।

आपका बंटी उपन्यास से मन्नू भंडारी को प्रसिद्धि प्राप्त हुई। जिसमें नारी जीवन से संबद्ध दाम्पत्य, तलाक मातृत्व, अकेलेपन से उत्पन्न उलझनों को सफलता के साथ व्यक्त किया गया है। उसी तरह मेहरून्निसा जी ने अपने प्रमुख उपन्यासों में भी इन्हीं समस्याओं को उजागर किया है। फर्क इतना है कि अपने कथा–साहित्य में उन्होंने मुस्लिम समाज में नारी की दशाओं एवं उत्पीड़न का ज्यादा वर्णन किया।

मालती जोशी का कथा साहित्य ज्यादातर सामाजिक जीवन से जुड़ा हुआ है। दाम्पत्य पारिवारिक, आधुनिक नारी की अनेक समस्याओं को चित्रित करने में मालती जोशी का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। उसी तरह मेहरून्निसा परवेज का स्थान भी अग्रणी है, क्योंकि उन्होंने नारी की भावनाओं के चित्रण के साथ–साथ नारी को केंद्रित मानकर उसे अपने साहित्य यात्रा में प्रस्तुत किया है। इस बारे में डॉ. सुरेश सिन्हा कहते हैं– *''नारियाँ हमारे वास्तविक जीवन में भी पुरूष की पूर्णता सिद्ध कर जीवन को पूर्व बनाती हैं।''*[2] याने मेहरूजी और मालती जोशी का कथा साहित्य नारी के अनेक रूपों को लेकर आया है।

मेहरून्निसा परवेज ने उपन्यासों में अपने जीवन के अनुभवों को रूपायित किया है। उसमें चित्रित पात्र और कथानक लेखन के अनुभव का अंग है। श्रीमती मेहरूजी ने भी भोगे हुए यथार्थ का चित्रण किया है। उसी तरह मालती जोशी भी अपने पात्रो के वर्णन में पारंगत हैं और अपनी आत्मीय शैली के कारण वे डाइंगरूम से लेकर किचन तक पढ़ी जाती है। उनका सीधा–सादा कथानक हृदय को छू जाता है। दिनेश द्विवेदी जी का कहना है कि– *''मालती जोशी का अपना एक विशिष्ट कैम्पस है उसके बाहर उन्होंने कभी भी मूव नहीं किया। बावजूद इस सबके मालती जी संपूर्ण देशकाल वातावरण के समुद्र में भले ही न तैरे पर उन्हें अपने परिवेश विशेष के कथा कुण्ड में गहरे तैर जाने का खास अभ्यास है।''*[3] मेहरून्निसा जी ने भी अपने साहित्य के द्वारा उसी तरह का परिवेश दर्शाया है।

आधुनिक महिला कथाकारों में उषा प्रियंवदा बहु चर्चित रही हैं। उनका लेखन भी अलग स्थान रखता है। आपकी कहानियाँ बड़ी साफ सुथरी है। गंभीर विषयों को लेकर चलने वाली बड़ा ही अर्थपूर्ण साहित्य आपने लिखा है। इनकी कहानियों में प्रमुख रूप से दो प्रकार का परिवेश है। एक भारतीय परिवेश और दूसरा विदेशी परिवेश इनकी कहानियों के नारी पात्र देह सुख के लिए पुरूष परिवर्तन करते हुए मिलेंगे। उनमें संबंधों को जीने की लालसा पुरूषों मे मिलती है। सामान्यतः इनके नारी पात्र अपराध भावना से मुक्त होकर पुरूष के संपर्क में आते हैं। परिवेश की बात करें तो मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में हिन्दू परिवेश, मुस्लिम परिवेश और आदिवासी परिवेश की बात, उनकी संस्कृति और जीवन शैली दिखाई देती है। उनके साहित्य में भी पर स्त्री गमन की बात को भी लिया गया है विवाह पश्चात एक ही तरह की जिन्दगी वर्षों से जीकर दाम्पत्य जीवन मे ऊब एकरसता और तनाव उत्पन्न होता है। इसलिए आज की पीढ़ी नयेपन की तलाश में है। घर में घुटन का जहरीला धुंआ पति–पत्नी को बाहर की ओर ले जाता है और विवाहेतर सम्बन्ध को स्थापित करने में उत्साहित करता है दाम्पत्य जीवन में हो रहे विघटन में आज यह एक महत्त्वपूर्ण कारण है। चमड़े की खोल कहानी में शुभा की माँ कहती है– *''जी दुखता है, शुभा सारा जीवन तो तेरे बाबूजी दूसरों के पीछे भागते रहे।''*[4] जिसमें उषा प्रियंवदा एवं अन्य नारी और पुरूष की तरह सुख के लिए पुरूष परिवर्तन अन्य नारी से संबंधों को जीने की लालसा पुरूष मे मिलती है।

मेहरून्निसा परवेज़ और कृष्णा सोबती दोनों लेखिकाओं में बड़ी समानता यह मिलती है कि दोनों ने बोल्ड लेखन किया है। साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों में अपनी रचनाओं के कारण सबसे अधिक विवदास्पद जो कहानीकार रही है वह कृष्णा सोबती ही हैं। उनके उपन्यास लेखन अल्प होने के बावजूद वे हिन्दी लेखन में अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। नारी की आन्तरिक उलझनों और दुविधाओं को बेहतर समझा और अंकित किया है। इनकी रचनाओं में नारी छायामयी रमणी न होकर वास्तविक जगत की हाड़–मास की नारी है। जिसकी अपनी. भौतिक और शारीरिक आवश्यकताएँ हैं। मेहरून्निसा की कहानियों पर समीक्षा करते हुए डॉ. विवेकी राय लिखते हैं, *''श्रीमती मेहरून्निसा परवेज न घर–परिवार को देखा, उसमें पीड़ित लोगों को देखा और उसमें पीड़ित नारी को गहराई से देखा और सबको चित्रांकित किया। सीधे–सादे शिल्प में अभिव्यक्त पीड़ा क्या कम झकझोरती है?''*[5]

मृदुला गर्ग दृढ़तापूर्वक स्पष्ट रूप से अपनी बात करने में माहिर हैं। वर्जनाएँ उन्हें दरकार नहीं है। मृदुला गर्ग ने अपने साहित्य में आज के टूटते परिवेश में जीवन की परिवर्तनशीलता और नारी की नयी जीवन दृष्टि को अभिव्यक्ति दी है। उनकी कहानियों में नारी की दयनीय अवस्था कामेच्छा पर पुरूष संबंध इसके अलावा नारी और पुरूष दोनों का शोषण होता हुआ नजर आता है। ज्यादातर सेक्स को महत्त्व देने वाली उनकी कहानियाँ हैं। बदलते स्त्री–पुरूष संबंध, टूटते रिश्ते और पारिवारिक संबंधों के बदलाव को उजागर करने वाला उनका लेखन है। मेहरून्निसा परवेज के ऊपर भी आलोचकों द्वारा अश्लीलता का आरोप लगाया गया है। उनकी लेखनी में नारी के शोषण का यथार्थता को चित्रण दिखाई देता है। समकालीन महिला लेखिकाओं ने ज्यादातर नारी को केंद्र में रखकर साहित्य की रचना की है। उसमें नारी पर हुए अन्याय और अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह किया है। यह समानता हर एक समकालीन महिला लेखिका के लेखन मे मिलती है। मृदुला गर्ग और मेहरून्निसा परवेज के साहित्य में सेक्स के महत्त्व पर दोनों साहित्यकारों में समानता दिखाई देती है।

प्रभा खेतान के कथा–साहित्य के पात्र विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए साहसपूर्वक अपने लिए मार्ग तलाशते हैं। अनुभव की प्रामाणिकता, लेखकीय संवेदना, भाषा शिल्प की रचनात्मक शक्ति के कारण हिंदी जगत में आपका विशिष्ट स्थान है। दर्शनशास्त्र में पीएच.डी. प्राप्त करने वाली प्रभा खेतान अपने व्यापक अनुभव के कारण लेखन को विस्तृत फलक प्रदान करती है। नारी की व्यथा और संघर्ष को भिन्न–भिन्न कोनों से प्रस्तुत कर आपने अपनी बौद्धिक परिपक्वता, चिंतनशीलता एवं गहरी संवेदनशीलता का परिचय दिया है। प्रभा खेतान के आगे शिक्षा की बात करें तो मेहरून्निसा परवेज़ बहुत पढ़ी लिखी नहीं हैं। अपनी शिक्षा के अधूरे छूट जाने के मलाल को अभिव्यक्त करते हुए मेहरून्निसा परवेज कहती है *''तो मुझे इतनी तालीम मिली कि मै अपनी जिन्दगी के लिए नौकरी कर सकती थी।''*[6] फिर भी मेहरून्निसा जी का साहित्य पढ़ने पर मालूम होता है कि वह इतनी शिक्षित न होने के बावजूद उनका साहित्य जगत अन्य साहित्य–कार की बराबरी करने योग्य माना जाता है। प्रभा खेतान की तरह उनका लेखन परिपक्व और धार दार माना जाता है।

प्रभा खेतान के उपन्यास आओ पेपे घर चले, छिन्नमस्ता, अपने अपने चेहरे, तालाबंदी जैसे उपन्यास महत्त्वपूर्ण हैं। इन उपन्यासों के पात्र विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए साहसपूर्वक अपने लिए मार्ग तलाशते हैं। उसी प्रकार मेहरून्निसा परवेज के उपन्यास आँखों की दहलीज, अकेला पलाश मेहरून्निसा जी के लेखन की समग्रता का प्रस्तुतीकरण लेकर आता है। सामाजिक व्यवस्था का अभिशाप और इस यातना से मुक्ति की छटपटाहट ही इनके लेखन का आधार है। मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी के विभिन्न रूपों का दर्शन होता है।

राजी सेठ का तत्सम् उपन्यास प्रथम कोटि का उपन्यास है, उसके मुख्य पात्र वसुधा, विवेक, आनंद, माँ, शरन और भाभी हैं। इस उपन्यास में वसुधा विधवा है, समाज जानता है कि वह एक प्राध्यापिका है। वह जीने का साधन जुटा सकती है मगर सुरक्षा की अपेक्षा रखती है। *''दुःखी दाम्पत्य का दुःख प्रायः नारियों को ही अधिक गंभीरता से भोगना होता है। इस बात का उल्लेख किया है।''*[7] उसी प्रकार मेहरून्निसा परवेज अकेला पलाश उपन्यास में तहमीना को इस बात का तजुर्बा है जिसके बारे में वो कहती है– ''औरत की जिन्दगी उस पौधे की तरह है जिसे एक जगह से उखाड़कर नई जगह लगाया जाता है। नई जमींन में अपनी जड़ें जमाने में उसे उतना ही समय लगेगा न, यदि उसी प्रकार वातावरण, पानी और पर्याप्त खाद नहीं मिला तो हो सकता है वह नयी जगह लग ही न पाये और सूख जायेगा।''[8] यहाँ राजी सेठ ओर मेहरून्निसा दोनों लेखिकाओं ने नारी को दाम्पत्य जीवन के बाद अपनी यादों, स्वप्नों और खुशियों को भूल नये जीवन को सँभालना होता है।

उसी प्रकार उनकी कहानियों में नारी चित्रण दिखाई देता है। संघर्षरत नारी कभी–कभी विद्रोह तक पहुँचती दिखाई देती है। यहाँ नारी में विद्रोह, अलगाव है परंतु मानसिक धरातल पर कई स्थानों पर न प्रेम हो सका और न अनुभूति परक संवाद। इन लेखिकाओं की नायिकाएँ कभी सामाजिक ढाँचे पर कुढ़ती है ओर कभी सम्यक् परिवर्तन के लिए उद्विग्न दिखाई देती हैं।

ममता कालिया की रचनाएँ भारतीय नारी के इर्द–गिर्द गुंथी गई हैं। पति के रहते हुए पर पुरूष से संबंध रखने वाली स्त्रियों को अपने साहित्य का विषय बनाया है। स्त्री के बदलते चित्र, उसकी मानसिकता, बिखरे हुए दाम्पत्य जीवन, मध्यवर्गीय शिक्षित आधुनिक व्यक्तियों के दकियानूसी विचार आदि का अंकन अपने साहित्य में किया है। नारी जीवन की दयनीय विसंगति उसकी वेदना, असहायता आदि को स्पष्ट रूप से खोलकर पाठकों के सामने रखा है। मेहरून्निसा परवेज के कथा– साहित्य के विषय में बात करें तो उपर्युक्त सभी विषयों को उन्होंने अपने कथा–साहित्य में रखा है। जो एक नारी होते हुये नारी संबंधित समस्याएँ उनकी कहानियों में उजागर हुयी हैं। ममता कालिया और मेहरून्निसा परवेज दोनों समकालीन साहित्यकार की दृष्टि से समान विचार रखती हैं जो उन्होंने पाठकों के समक्ष रखे हैं।

डॉ. सुनीता जैन हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं मे समान अधिकार से लिखने वाली लेखिका कहानीकार और उपन्यासकार के साथ एक उत्कृष्ट कवयित्री भी हैं। उन्होंने प्रेम को प्राथमिकता देकर साहित्य में बहुत कुछ लिखा है। परंतु उसमें से अधिकांश रोमानी उच्छवासों से घिरकर भावुकतापूर्ण सरलीकरण का शिकार हो गया है। इन्हीं स्थितियों को सुनीता जैन की कहानियों में देखा जा सकता

है। संयम और क्षमता से उन्होंने अपनी अलग पहचान स्थापित की है। यहीं मेहरून्निसा परवेज की हिन्दी, उर्दू और फारसी भाषा पर अच्छी पकड़ मानी जाती है और मुस्लिम समाज के सामाजिक धरातल पर जनजीवन चित्रण किया है। मुस्लिम समाज के खान–पान, रहन–सहन, नीजि त्यौहारों और मजहबों को यथासाध्य पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है। उनके उपन्यासों में आधुनिक शिक्षा प्रणाली से प्रभावित पुराने मूल्यों से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्षरत नारी का चित्रण है।

सुनीता जैन के तितिक्षा उपन्यास के फ्लेप पृष्ठ में कहा गया है– *''बिंदु ओर बोज्यू ये दोनों उपन्यास प्रेम की प्रथम अनूभूति के धरातल पर कुछ इस तरह संचरित होते है जैसे वर्षा की पहली फुहार धरती को सोंधी गंध से भर देती है।'*[9] पूरे उपन्यास में लेखिका ने रोमानी प्रेम भावनाओं को घोलकर एक शीशे में भर देने का प्रयास किया है। उनके उपन्यास की नायिकाएँ रूढ़िग्रस्त समाज की नैतिकताओं की, दुर्भेद्य दीवार से टकराकर बिखरती रहती हैं। उसकी तुलना में मेहरून्निसा परवेज़ ने भी अपने लेखन में प्रेम के पवित्र स्वरूप को अपनी कहानी वीराने में राजू, अशोक से प्रेम करती है। अशोक का अकस्मात निधन हो जाने पर राजू संसार में अकेली रह जाती है। वह ब्याहता न होते हुए भी विधवा की जिन्दगी बिताती है।

मैत्रेयी पुष्पा के कथा लेखन में नारी जीवन की आंतरिक और बाह्य परिस्थितियाँ झलकती हैं। मैत्रेयी का लेखन नारी विमर्श को एक नयी पहचान और आयाम देने में सफल भूमिका निभा रहा है। अपने युग के अन्तर्विरोधों को उन्होंने सशक्त वाणी दी तथा स्त्री को केन्द्र में रखते हुए उसके विद्रोह तथा परिवर्तनशील मानसिकता को कथावस्तु के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। वे दावे के साथ कहती है मै हिन्दी कथा लेखन में एक तरह की एक्टिविस्ट ही तो हूँ। मेहरून्निसा परवेज के कथा–साहित्य में भी नारी के आंतरिक ओर बाह्य परिस्थितियाँ झलकती हैं। साथ में नारी के विभिन्न रूपों का दर्शन होता है। नारी को हमेशा गुलामी की जंजीरों में जकड़ा गया है। परम्पराओं तथा रीतिरिवाजों के नियम दिखाकर उसे हमेशा कमजोर बनाया है। परवेजजी ने इन सारी महिलाओं की अग्रदूत बनकर इनकी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी है, जो मैत्रेयी पुष्पा के कथा–साहित्य में भी मिलती है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास लेखन के संदर्भ मे विजय बहादुर सिंह के विचार इस प्रकार हैं– *''लेखक होने के लिए अनुभव भले ही बुनियाद का काम करें, किन्तु इन अनुभवों को समुचित परिप्रेक्ष्य देना सबसे बड़ी चुनौती है। मैत्रेयी ने अपनी कथाओं में यह परिप्रेक्ष्य रचा है कि नहीं, इसकी गवाही कोई आलोचक क्या देगा? उनके उपन्यास खुद इसके गवाह हैं। वे जितने अनुभव प्रगल्भ है, उतने ही विचार प्रखर भी। जितने विचार प्रखर हैं उतने ही मुखर और आक्रामक भी। महादेवी ने कभी लिखा था कि वे आँसुओं की हाट तो लगती है पर उनके यहाँ चिनगारियों का मेला भी है। मैत्रेयी के यहाँ आँसू सूख–सूखकर निपट चिनगारियों में बदल चुके है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों का वातावरण बहुत गर्म है। उनमें इतनी बहसे हैं, इतनी लड़ाइयाँ है, इतनी हार–जीत है कि सुख के ऊपर भारी पड़ता दुःख और दुःख को चकमा देकर उठ खड़ा होता सुख चटा–उपरी किए रहते हैं।''*[10] मेहरून्निसा परवेज ने भी अपने दुःख को वाणी देने के लिए यह सशक्त माध्यम चुना है। जिसमें वह स्वयं नारी होने के नाते नारी की उन सभी व्यथाओं को अपनी कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। जो मेहरून्निसा परवेज और मैत्रेयी पुष्पा दोनों में समान पे मिलती है। दोनों लेखिकाओं ने नारी जीवन रात–दिन की विवशताओं, समस्याओं के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत भावुक हृदय से हृदय द्रावक चित्रण किया है।

सूर्यबाला स्वयं को किसी परम्परा से सम्बद्ध नहीं मानती हैं। कहानी के निर्माण में कथ्य एव शिल्प के सन्तुलन में विश्वास रखती हैं। इनके लेखन में बौद्धिकता का समावेश अधिक रहता है। स्वयं के विषय में लेखिका का कहना है– *''वह जीवन के प्रति अतिमोहग्रस्त है। इनको सबसे अधिक आस्था मानवीय सम्बन्धों में है। इनका मानना है कि जीवन में मिलने वाला प्यार व्यक्ति के अन्दर जीवन के प्रति विश्वास उत्पन्न करता है, जीना सिखाता है। व्यक्ति के अन्दर ऐसी शक्ति उत्पन्न करता है, जिससे वह अपने को सही ढंग से कह सके तथा अपनी कमियों को स्वीकार सके।''*[11] यहीं बात सूर्यबाला के लेखन को पानीदार बनाता है। सूर्यबाला की तरह मेहरून्निसा परवेज भी जीवन में मिलने वाला प्यार

व्यक्ति के अन्दर जीवन के प्रति अपने आप में कितनी शक्ति भर देता है वह उनके कथा साहित्य के लेखन को पढ़ते ही पता चल जाता है।

हिंदी कथा–साहित्य जगत में शिवानी ने भी मेहरून्निसा परवेज की तरह अपनी पहचान बनायी है। उसके साथ ही संस्मरण एवं रेखाचित्र भी आनंद देने वाले हैं। जीवन की विविध संगतियों का उद्‌घाटन आपने अपने साहित्य में किया है। शिवानी ने अपने संपूर्ण साहित्य में समाज में रहने वाली वेश्यावृति, गरीबी, कुंठाग्रस्त जीवन का खुले आम चित्रण किया है। उसी तरह श्रीमती मेहरून्निसा परवेज की कथाओं की नायिकाओं के निबध यौन संबंधों को लेकर इस पर काफी आलोचनाएँ होती हैं, कई आलोचक इसे लेखिका के मानसिक बीमारी का संकेत तक कह डालते हैं। उसी तरह मेहरून्निसा जी ने भी अपने साहित्य के द्वारा सामाजिक यथार्थता को पाठको के सामने बेझिझक रखा है।

मेहरून्निसा परवेज के साथ समकालीन महिला लेखिकाओं के लेखन की तुलना करने पर इस निष्कर्ष पर सहज ही पहुँचा जा सकता है कि नारी चित्रण के साथ–साथ लेखिकाओं ने अस्तित्व बोध की स्थापना की है। उनके अनेक पात्र अस्तित्व रक्षा के लिए छटपटाते नजर आते है। पारिवारिक संबंधों का चित्रण उनके कथा–साहित्य में हुआ है।

लेखिकाओं ने अपने साहित्य में संबंधों के साथ–साथ अनेक सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है। उसके साथ नारी को भावुक मानकर उसकी उद्‌बुद्ध मति की उपेक्षा नहीं की जा सकती। मार्क्सवाद से प्रभावित होकर उसने पूंजीपति के अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठाई और फ्रायड के प्रभाव को ग्रहण करके मनोवैज्ञानिक उपन्यास भी लिखे।

सामाजिक जीवन की अन्याय निष्ठा पर कटु–व्यंग्य लिखे तो उन्मुक्त यौन सम्बन्धों के प्रति नारी की परिवर्तित मानसिकता समकालीन उपन्यास में मिलती है। सेक्स से परे नारी की अपनी कोई वैयक्तिक पहचान है, इसे स्वर देने की चेष्टा कथा लेखिकाओं ने की है। नारी केवल देह संज्ञा ही नहीं, जिसे पुरूष अपनी इच्छा के अनुसार भोग सके, बल्कि उसे देह में अटका वह सूक्ष्म चैतन्य तत्त्व भी है, जो अपनी निजी इच्छाएँ एवं आवश्यकता का बोध करा सकता है। आर्थिक मूल्यों पर यदि नारी–देह उपलब्ध हो भी जाए तो भी उसकी सम्पूर्णता को पा लेना प्रत्येक पुरूष के वश की बात नहीं है। नारी का अपना मनोविज्ञान है, जिसे समझे बिना, पुरूष उसे सच्चे साथी के रूप में नहीं पा सकता। जब तक वैयक्तिक तोर पर नारी–पुरूष की मानसिकता में सामंजस्य नहीं बैठता, सामाजिक क्षेत्र में नारी–पुरूष का सहचर सहचरी के रूप में सपना प्रायः दुष्कर कार्य है। उसी तरह समकालीन महिला लेखिकाओं ने अपने समय की हर समस्या को अपने लेखन में जगह दी है तो मेहरून्निसा परवेज के लेखन में सामाजिक धरातल पर आधारित मुस्लिम समाज का चित्रण किया है।

समकालीन शब्द भी उसी तरह सम यानी समान कालीन का अर्थ उस काल में समकालीन एक ही काल में या दौर में हुई परिस्थितियाँ, समस्याओं का चित्रण या निरूपण होता है। समकालीन हिन्दी कथा लेखन के परिदृश्य पर ध्यान केन्द्रित करे तो महिला कथाकारों की दुनिया एक खास अर्थ में विशिष्ट रूप से चेतना सम्पन्न दुनिया है।

इसमें प्रमुख महिला कथा लेखिकाएँ मन्नू भंडारी, मालती जोशी, उषा प्रियावंदा, ममता कालिया, शिवानी, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्याबाला, सुनीता जैन, राजी सेठ आदि है। इन सभी महिला लेखिकाओं को स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य आंदोलन के दौरान महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका था। वास्तव में इन लेखिकाओं के साहित्य ने दुनिया में हरियाली क्रांति, आधुनिक जीवन का सारा ज्ञान और बौद्धिक तल पर सत्य को उजागर किया है। समकालीन वास्तविकता से रूबरू हो रहे विचारों और नये प्रयोगों की संभवनाएँ महिला कथाकारों की महत्त्वपूर्ण देन हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात अनेक महिला लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से युग जीवन को जीवंत, सार्थक एवं अद्यतन दृष्टिकोण से अभिव्यक्त किया है। स्वतंत्रता के पश्चात महिला कथालेखन के बदलते हुए सामाजिक सन्दर्भों को यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस प्रकार लेखिका के कथा साहित्य में नारी चित्रण दिखाई देता है। यहाँ नारी में विद्रोह अलगाव है, परंतु मानसिक धरातल पर कई स्थानों

में न प्रेम हो सका, न अनुभूति, लेखिका की नायिकाएँ कभी सामाजिक ढाँचे पर कुंठित है, और कभी सम्यक परिवर्तन के लिए उदविग्न दिखाई देती है। समकालीन जीवन की विसंगतियों, बदलते सन्दर्भों एवं विडम्बनाओं को स्पष्ट करने में समकालीन महिला लेखिकाओं ने अहम भूमिका अदा की है जिस पर यहा प्रकाश डालने का उपक्रम है। मेहरून्निसा परवेज तथा उनकी समकालीन लेखिकाओं ने जो भी साहित्य लिखा है। उनमें कहीं समानता मिलती है तो कहीं पर असमानता भी पायी जाती है, क्योंकि हर एक समकालीन लेखिका का अपना निजी जीवन अनुभव भी पाया जाता है। जो उनको अपने से अलग कर देता है, जिसमें उस समय की परिस्थिति या समस्या को ध्यान में रखते हुए भी समानता–विसमानता दिखाई देती है। लेखन कार्य में एक समय लिखते हुए भी एकरूपता नहीं होती है। जो उसकी विशेषता कही जाती है।

संदर्भ संकेत

1 डॉ. गोवर्धन सिंह षेखावत, नयी कहानी उपलब्धि और सीमाएँ, पृश्ठ–144

2 डॉ. सुरेष सिन्हा, हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना, पृश्ठ–56

3 सं. दिनेष द्विवेदी, महिला कथाकार, 1980, पृश्ठ–34

4 मेहरून्निसा परवेज, एक ओर सैलाब–चमड़े का खोल, पृश्ठ–57

5 डॉ. विवेकी राय, प्रकर, 1973 वर्श, 7 अंक–6

6 मेहरून्निसा परवेज, ऋतुचक्र, मार्च–जून, 1989, पृश्ठ–45

7 मंजुल भगत, पारूल के लिए, पृश्ठ–54

8 मेहरूनिन्नसा परवेज, अकेला पलाष, 1997, पृश्ठ–149

9 सुनिता जैन, तितीक्षा फ्लैप पृश्ठ से

10 मैत्रेयी पुश्पा, चिन्हार, पृश्ठ–115

11 दिनेश द्विवेदी, चर्चित कथाकारो की कहानियाँ, पृश्ठ–55